Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2019 SHISRRJ | Volume 2 | Issue 4 | ISSN : 2581- 6306

वैष्णव धर्म में दशावतार : एक अनुशीलन

जितेन्द्र कुमार यादव

शोध–छात्र, इतिहास अध्ययनशाला, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर (म०प्र०)।

अवतारवाद एक आधारभूत वैष्णवीय संकल्पना है, जो भगवत नारायण के नायक देवता वासुदेव कृष्ण के साथ एकीकरण से विकसित हुआ प्रतीत होता है। इस एकीकरण के फलस्वरूप ही कृष्ण नारायण के नरावतार माने जाते लगे थे। विष्णु के अवतार भागवत धर्म की मुख्य भित्ति है। पुराणों में दशावतार का उल्लेख अनेकशः हुआ है। कुछ पुराणों में उनके कार्यों का उल्लेख भी मिलता है। पारम्परिक लोकधारणा में भगवान विष्णु के चौबीस अवतारों की चर्चा है, जिसमें दशावतार भी शामिल किये जाते हैं। पांचरात्रागमों में इसकी संख्या चालीस बताई गयी है।[1] भागवत पुराण की प्रथम सूची में बाइस नामों तथा दूसरी में चौबीस का जिक्र है। द्वितीय सूची में प्रथम के बीस अवतार शामिल हैं। पुराणों में भगवान विष्णु के अवतारों की संख्या चालीस तक बताई गयी है किन्तु प्रख्यात अवतारों की संख्या दस मानी गयी है जो इस प्रकार हैं– 1. मत्स्य, 2. कूर्म, 3. वराह, 4. नृसिंह, 5. वामन, 6. परशुराम, 7. श्रीराम, 8. श्रीकृष्ण, 9. बुद्ध और 10. कल्कि। यह सर्वस्वीकृत अभिधात्मक दशावतार है। यदि बलराम को अलग अवतार मान लिया जाय तो यह संख्या ग्यारह हो जाती है।

मत्स्यावतार –

भगवान विष्णु के दशावतारों में प्रथम अवतार मत्स्यावतार है। इस अवतार के विषय में बताया गया है कि जलप्लावन में वेद समेत जब सारी सृष्टि अपार जलराशि में निमज्जित हो गयी तो मत्स्य रूपी भगवान विष्णु ने वैवस्वत मनु का उद्धार किया, साथ ही अपार जलराशि से वेदों को भी बचाया। मत्स्यावतार की कथा में ऐतिहासिक सत्य निहित है। इस कथा का सम्बन्ध प्राचीन समय में, सारस्वत प्रदेश में हुए जलप्लावन की घटना से है।

जलप्लावन की घटना का उल्लेख ऋग्वेद में नहीं है। ऐसा प्रतीत होता है कि ऋग्वेद के प्रणयन के पश्चात् ही यह घटना घटित हुई होगी। भारतीय साहित्य की बात करें तो जल प्लावन की इस घटना का उल्लेख सर्वप्रथम अथर्ववेद में हुआ है। इस कथाक्रम की शृंखला में इस घटना पर प्रकाश डालने वाला द्वितीय ग्रन्थ शपतपथ ब्राह्मण है। जलप्लावन की घटना कब हुई? इसकी समय–सीमा क्या थी? यह एक ज्वलन्त प्रश्न है। सुमेरी मान्यता के अनुसार जल–प्लावन का समय ज्रिस्तपूर्व 3100 वर्ष के लगभग रहा।[2] अनुसंधानों से पता चलता है ऋग्वेद के

प्रणयन के पश्चात् ही सुमेरी देवतन्त्र का विकास हुआ। जलप्लावन से ऋग्वैदिक (सारस्वत) सभ्यता को आघात लगा किन्तु ऋग्वैदिकों की संततियों ने उसे पुनः नये सिरे से विकसित किया। जिसके पुरातात्विक अवशेषों को हड़प्पा–सभ्यता के नाम से जाना जाता है। यह वास्तव में उत्तर सारस्वत सभ्यता है। डॉ० रामविलास शर्मा ने 'पश्चिमी एशिया और ऋग्वेद'[3] में भाषा वैज्ञानिक एवं समाजशास्त्रीय तथ्यों के आधार पर देवतन्त्र के विकास का एक ठोस एवं बहुआयामी प्रमाण–प्रस्तुत किया है।

शर्मा जी के अनुसार हमारा ऋग्वेद हड़प्पा–सभ्यता से ही नहीं वरन् मिस्र एवं सुमेर की सभ्यता से भी प्राचीन है। मार्शल ने हड़प्पा–सभ्यता का विकास काल ख्रिस्तपूर्व 3250–2750 वर्ष माना है। इस आधार पर जलप्लावन का समय और ऋग्वेद का प्रणयन–काल और भी पहले मानना संगत होगा।[4] सम्भावना है कि सुमेरियनों ने ऋग्वेद के प्रणयनकाल के बाद ही किसी समय जल प्लावन की कथा ऋग्वैदिकों की संततियों (सम्भवतः मत्स्यों अर्थात् मत्स्य जनपदवासी बहिर्गामी आर्यों) से पायी होगी।[5] विश्व के अन्य देशों में देवतन्त्र के विकास एवं जलप्लावन की कथा सुमेरिया से फैली होगी।

कूर्मावतार –

भगवान विष्णु के प्रख्यात दशावतारों में द्वितीय कूर्मावतार है। भागवत–निर्दिष्ट बाइस अवतारों की अनुक्रमणिका में यह ग्यारहवें स्थान पर आसीन है। पुराख्यानकों के अनुसार अमृत की प्राप्ति हेतु जब देवासुर मिलकर नागराज वासुकी को रस्सी बनाकर समुद्र–मंथन की घटना को अंजाम दिये उस समय भगवान विष्णु ने कूर्म–रूप धारण कर मन्दराचल पर्वत को अपनी पीठ पर धारण किया था। पुराणों[6] में कूर्म को भगवान विष्णु का अवतार कहा गया है। शतपथ ब्राह्मण के अनुसार कूर्म प्रजापति का रूपान्तरण है। प्रजापति ने अपत्यों की सृष्टि करते समय कूर्म रूप धारण किया था– स यत् कूर्मो नाम। एतद्वै रूपं कृत्वा प्रजापतिः प्रजाः असृजत।[7] 'कूर्म' को स्पष्ट करते हुए कहा गया है– यदसृजत अकरोत् तत् यद करोत् तस्मात् कूर्मः। कश्यपो वै कूर्मः। तस्मादाहुः सर्वाः प्रजाः काश्यत्य इति।[8] कूर्म का दूसरा नाम कश्यप है। इसी कारण सारी प्रजा कश्यप की सन्तान कहलायी। पाश्चात्यों के अनुसार भी कूर्मावतार का यही स्रोत है।[9]

> तस्य यदधरं कपालम्। अयं सः लोकः। तत्प्रतिष्ठितमिव भवति।
> प्रतिष्ठित इव हययं लोकः।[10]

तैत्तिरीय आरण्यक में इसी विषय से सम्बन्धित एक घटना का जिक्र है। एक बार कूर्म और प्रजापति में बहस हो गयी। प्रजापति ने कहा– 'तू मेरी त्वचा और मांस से उत्पन्न हुआ है। इस कारण पुरुष मैं हूँ।' प्रतिवाद करते हुए कूर्म ने कहा– 'मैं तुमसे भी पहले था, इस कारण मैं 'पुरुष' हूँ। अन्ततः प्रजापति को कूर्म की महत्ता स्वीकार करनी पड़ी। प्रजापति कूर्म की महत्ता स्वीकार कर उनसे अपत्य–सृष्टि हेतु आग्रह करते हैं।' तदुपरान्त कूर्म सृष्टि करता है–

....स तपोऽतप्यत। स तपस्तप्त्वा। शरीरमधूनुतातस्य यन्मां समासीत।। ..... यो रसः। सोऽयाम्। अन्तरतः कूर्म भूतं सर्पन्तम् तमब्रवीत्। पूर्वमेवाहमिहासमिति। तत् पुरुषस्य पुरुषत्वम्। स सहस्रशीर्षा पुरुषः। सहस्राक्षः सहस्रपात। भूत्वोदतिष्ठत्। तमब्रवीत्। त्वं वे पूर्वं समभूत त्वमिदं कुरुष्वेति।[11] निश्चित रूप से कूर्म द्वारा अपत्य–सृष्टि एक महत्वपूर्ण घटना है। कूर्म को प्राणतत्व अर्थात् प्राणियों की चेतनाशक्ति भी घोषित किया गया है।

वराह अवतार –

भगवान विष्णु के प्रख्यात अवतारों में तीसरा और भागवत–निर्दिष्ट बाइस अवतारों में दूसरा[12] वराह अवतार है। कहा गया है कि रसातलगता पृथ्वी को लोकल्याण हेतु ऊपर निकाल लाने के विचार से यज्ञेश (प्रजापति ब्रह्मा/विष्णु) ने वराह रूप ग्रहण किया।[13] यह अवतार–कला हमें वैदिक साहित्य में प्राप्त होता है। वैदिक साहित्य के अनुसार मत्स्य और कूर्म की तरह वराह भी प्रजापति का ही रूपान्तरण है। वराह के स्वरूप को यज्ञमय माना गया है। इसी कारण इसकी सामान्य संज्ञा 'यज्ञवराह' से दी गयी है। कई पुराणों में यज्ञमय वराह द्वारा पृथ्वी के उद्धार की कथा के साथ हिरण्याक्ष–वध का भी जिक्र मिलता है। शतपथ ब्राह्मण[14] में वराह को लोककल्याण में रत परम सामर्थ्यशाली शक्ति एवं पृथ्वीपति कहा गया है। इस सन्दर्भ में तैत्तिरीय संहिता में कहा गया है कि सृष्टिपूर्व सब जलमग्न था। सर्वत्र अपार जलराशि विचरण करती थी। एक दिन प्रजापति वायुरूप धारण कर भ्रमण के लिए निकले। उनकी नजर जलमग्न पृथ्वी पर पड़ी। पृथ्वी की कष्टदायी दशा उनसे देखी न गयी। अतः उन्होंने वराहरूप धारण कर उसे ऊपर उठाया। पुनः विश्वकर्मा रूप धारण कर उसे अच्छी तरह से पोंछा और दबाया। दबाये जाने की वजह से पृथ्वी थोड़ी चपटी हो गयी। आपो वा इदमग्रे सलिलमासीत्। तस्मिन् प्रजापतिः वायुः भूत्वा अचरत्। सा इमामपश्यत्। तां वराहो भूत्वा अहरत्। तां विश्वकर्मा भूत्वा व्यमार्तृ। सा अप्रथत्। सा पृथिव्यभवत्। तत् पृथिव्यै पृथिवित्वम्।[15] तैत्तिरीय ब्राह्मण[16] और तैत्तिरीय आरण्यक[17] में इस कथा को और अधिक विस्तार मिला है। तैत्तिरीय आरण्यक में पृथ्वी के उद्धारक वराह के सौ हाथों की संकल्पना की गयी है–

उद्धृतासि वराहेण कृष्णेन शतबाहुना।[18]

अपने सैकड़ों हाथों का प्रयोग कर वराह ने पृथ्वी को अपार जलराधि से अविलम्ब बाहर निकाला। उसे पोंछा और दबाया पुनः अपत्यों की सृष्टि की।

नृसिंह अवतार –

भगवान विष्णु के प्रख्यात अवतारों में चौथे स्थान पर आसीन एवं भागवत–निर्दिष्ट बाइस अवतारों में चौदहवें स्थान पर विराजमान नृसिंह अवतार का विशेष महत्व है। इसकी कथा भी काफी रोचक है। कहा जाता है, कश्यप नामक ऋषि एवं उनकी पत्नी दिति को दो पुत्र हुए जिनमें से एक का नाम 'हिरण्याक्ष' तथा दूसरे का 'हिरण्यकशिपु' था। हिरण्याक्ष को भगवान विष्णु ने पृथ्वी की रक्षा हेतु वराह रूप धरकर मार दिया था। अपने भाई की मृत्यु से दुखी और क्रोधित हिरण्यकशिपु ने भाई की मृत्यु का प्रतिशोध लेने के लिए अजेय होने का संकल्प लिया।

सहस्रों वर्ष तक उसने कठोर तप किया। उसकी तपस्या से प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी ने उसे अजेय होने का वरदान दिया। ब्रह्मा जी से ऐसा वरदान पाकर हिरयण्कश्यप ने प्रभुभक्तों पर अत्याचार करना शुरू कर दिया, लेकिन भक्त प्रह्लाद के जन्म के बाद हिरण्यकश्यप उसकी भक्ति से भयभीत हो जाता है, उसे जान से मार देना चाहता है। भक्त पर हो रहे अत्याचार से दुखी भगवान विष्णु ने नृसिंह का रूप धारण कर उसका सीना वैसे ही चीर डाला, जैसे चटाई बनाने वाला सींक को चीर डालता है।[19] मत्स्य एवं वायु पुराण में उनके जन्म लेने के संकेत मिलते हैं। कहा गया है कि चौथे तामस मन्वन्तर में देवताओं के विपत्तिग्रस्त होने पर हिरण्यकशिपु का वध करने के लिए समुद्र–तट पर नृसिंह सम्भूत हुए।[20] हॉपकिन्स के अनुसार नृसिंह शब्द पहले विष्णु के पराक्रम की श्रेष्ठता का बोधक विशेषण भर था, जिससे कालान्तर में विष्णु के नृसिंह अवतार की कल्पना विकसित हुई।

5. वामन अवतार –

भगवान विष्णु के प्रख्यात अवतारों में पाँचवां और भागवत–वर्णित बाइस अवतारों में पन्द्रहवाँ वामन अवतार माना गया है। यह भगवान विष्णु का मानव रूप अवतार है। इनको दक्षिण भारत में उपेन्द्र के नाम से भी जाना जाता है। पौराणिक आख्यानों में कहा गया है कि एक बार दैत्यराज बलि ने इन्द्र को परास्त कर स्वर्ग पर अधिकार कर लिया। पराजित इन्द्र की दैनिक स्थिति को देखकर उनकी माँ अदिति बहुत दुःखी हुई। उन्होंने अपने पुत्र के उद्धार के लिए भगवान विष्णु की आराधना की। भक्ति से प्रसन्न होकर भगवान विष्णु प्रकट हुए और अदिति से बोले – देवी! चिन्ता मत करो। मैं तुम्हारे पुत्र के रूप में जन्म लेकर इन्द्र को उसका खोया राज्य दिलाऊँगा। समय आने पर उन्होंने आदिति के गर्भ से वामन रूप में अवतार लिया।

एक दिन उन्हें पता चला कि राजा बलि स्वर्ग पर स्थायी अधिकार जमाने के लिए अश्वमेध यज्ञ कर रहा है। यह सुनकर वामन वहाँ पहुँचे। उनके तेज से यज्ञशाला प्रकाशित हो उठी। बलि ने उन्हें एक उत्तम आसन पर बिठाकर उनका सत्कार किया और अन्त में उनसे भेंट माँगने के लिए कहा। पर वामन चुप रहे। लेकिन जब बलि उनके पीछे पड़ गया तो उन्होंने अपने कदमों के बराबर तीन पग भूमि भेंट में माँगी। बलि ने उनसे और अधिक माँगने का आग्रह किया, लेकिन वामन अपनी बात पर अड़े रहे। इस पर बलि ने हाथ में जल लेकर तीन पग भूमि देने का संकल्प ले लिया। संकल्प पूरा होते ही वामन का आकार बढ़ने लगा और वे वामन से विराट हो गये। उन्होंने एक पग से पृथ्वी और दूसरे से स्वर्ग नाप लिया। तीसरे पग के लिए बलि ने अपना मस्तक आगे कर दिया। वह बोला–प्रभु, सम्पत्ति का स्वामी सम्पत्ति से बड़ा होता है। तीसरा पग मेरे मस्तक पर रख दें। सब कुछ गंवा चुके बलि को अपने वचन से न फिरते देख वामन प्रसन्न हो गये। उन्होंने ऐसा ही किया और बाद में उसे पाताल का अधिपति बना दिया और देवताओं को उनके भय से मुक्ति दिलाई।[21] वामन अवतार का स्रोत वैदिक साहित्य है। वैदिकोत्तर साहित्य में वर्णित वामन–अवतार कथा की बुनावट में तीन मुख्य तथ्य हैं– देवों की सहायता करना, वामन का विराट बनना और तीन पगों से सम्पूर्ण लोक का आच्छादन कर लेना। ये तीनों वैशिष्ट्य ऋग्वेद–वर्णित विष्णु में प्राप्त हैं।

परशुराम अवतार –

भगवान विष्णु के प्रख्यात अवतारों में छठां और भागवत–निर्दिष्ट बाइस अवतारों में सोलहवाँ[22] अवतार परशुराम अवतार है। परशुराम त्रेतायुग में एक ब्राह्मण ऋषि के यहाँ पैदा हुए। पौराणिक वृत्तान्तों के अनुसार उनका जन्म महर्षि भृगु के पुत्र महर्षि जमदग्नि द्वारा सम्पन्न पुत्रेष्टि यज्ञ से प्रसन्न देवराज इन्द्र के वरदान स्वरूप पत्नी रेणुका के गर्भ से वैशाख शुक्ल तृतीया को मध्य प्रदेश के इन्दौर जिला में ग्राम मानपुर के जनापाव पर्वत पर हुआ। वे भगवान विष्णु के आवेशावतार हैं। पितामह भृगु द्वारा सम्पन्न नामकरण संस्कार के अनन्तर राम कहलाये। वे जमदग्नि का पुत्र होने के कारण जामदग्न्य और शिवजी द्वारा प्रदत्त परशु धारण किये रहने के कारण परशुराम कहलाये। आरम्भिक शिक्षा महर्षि विश्वामित्र एवं ऋचीक के आश्रम में प्राप्त होने के साथ ही महर्षि ऋचीक से शरङ्ग नामक दिव्य वैष्णव धनुष और ब्रह्मर्षि कश्यप से विधिवत अविनाशी वैष्णव मन्त्र प्राप्त हुआ। तदनन्तर कैलाश गिरिशृंग पर स्थित भगवान शंकर के आश्रम में विद्या प्राप्त कर विशिष्ट दिव्यास्त्र विधुदभि नामक परशु प्राप्त किया। शिवजी से उन्हें श्रीकृष्ण का त्रैलोक्य विजय कवच, स्तवराज स्त्रोत एवं मन्त्र कल्पतरु भी प्राप्त हुए। चक्रतीर्थ में किये कठिन तप से प्रसन्न हो भगवान विष्णु ने उन्हें त्रेता में रामावतार होने पर तेजोहरण के उपरान्त कल्पान्त पर्यन्त भूलोक पर

तपस्यारत रहने का वर दिया। वे शास्त्रविद्या के महान गुरु थे। उन्होंने भीष्म, द्रोण व कर्ज को शस्त्रविद्या प्रदान की थी। उन्होंने कर्ण को अभिशाप भी दिया था। वे पुरुषों के लिए आजीवन एक पत्नीव्रत के पक्षधर थे। उन्होंने अत्रि की पत्नी अनसूया, अगस्त्य की पत्नी लोपामुद्रा व अपने प्रिय शिष्य अकृतवण के सहयोग से विराट नारी–जागृति–अभियान का संचालन भी किया था।

उनके संदर्भ में यह भी कहा जाात है कि जब क्षत्रिय आर्य–मर्यादा का उल्लंघन करने लगे। ब्राह्मण–द्रोही हो गये। साथ ही पृथ्वी के लिए कण्टक साबित हुए, तब भगवान विष्णु ने परशुराम के रूप में अवतीर्ण होकर अपने तीक्ष्ण परशु से इक्कीस बार उनका संहार किया।[23] मत्स्यपुराण की गणना में भी ये छठें अवतार सिद्ध हुए हैं, जो उन्नीसवें त्रेता युग में हुए थे तथा विश्वामित्र इनके यज्ञ–पुरोहित थे–

एकोनविंश्यां त्रेतायां सर्वक्षत्रान्तकृद् विभुः।
जामदग्न्यस्तथा षष्ठो विश्वामित्र पुरः सरः।।[24]

भारतीय मान्यता के अनुसार परशुराम, राम, कृष्ण, बुद्ध आदि की तरह एक ऐतिहासिक पुरुष है। हमारा वैदिक साहित्य उन्हें मान्यता प्रदान करता है।

राम अवतार –

भगवान विष्णु के प्रख्यात अवतारों में सातवाँ और भागवत–निर्दिष्ट बाइस अवतारों में अट्ठारहवाँ अवतार रामावतार माना गया है। रामायण में वर्णन के अनुसार अयोध्या के सूर्यवंशी राजा, चक्रवर्ती सम्राट दशरथ ने पुत्र की कामना से यज्ञ कराया जिसके फलस्वरूप उनके पुत्रों का जन्म हुआ। श्रीराम का जन्म देवी कौशल्या के गर्भ से अयोध्या में हुआ था। श्रीराम जी चारो भाईयों में सबसे बड़े थे। हर वर्ष चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को श्रीराम जयन्ती या रामनवमी का पर्व मनाया जाता है। श्रीराम का जीवनकाल एवं पराक्रम महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित संस्कृत महाकाव्य रामायण के रूप में वर्णित हुआ है। रामायण में सीता की खोज में श्रीलंका जाने के लिए 48 किलोमीटर लम्बे और 03 किलोमीटर चौड़े पत्थर के सेतु का निर्माण करने का उल्लेख प्राप्त होता है, जिसको रामसेतु कहते हैं।

देवकार्य सम्पन्न करने की इच्छा से विष्णु ने राम रूप में अवतरित हो सेतु–बन्धन, रावण–वध आदि शौर्यपूर्ण कार्य किये।[25] भारतीय मनीषा राम को इक्ष्वाकुवंशीय ऐतिहासिक पुरुष स्वीकार करती है। उनका समय मोटे तौर पर साढ़े चार हजार वर्ष खिस्तपूर्व स्वीकार किया जाता है।[26] इसके विपरीत भारत में अद्यावधि उपलब्ध पुरातात्विक साक्ष्यों और साहित्यिक सन्दर्भों के आधार पर यूरोपीय पण्डितगण एवं उनके द्वारा बनायी गयी लीक का अनुसरण कर अध्ययन को नयी दिशा देने वाले आधुनिक भारतीय अध्येताओं के शोध–निष्कर्ष राम की ऐतिहासिक सत्ता को खिस्तपूर्व प्रथम सहस्राब्दी से पूर्व मानने में अक्षम सिद्ध होते रहे, पर अब स्थिति परिवर्तित होती दिख रही है।[27] वैदिक साहित्य में रामकथा के कई प्रमुख पात्रों के नाम मिलते तो हैं, पर उनमें पारम्परिक सम्बन्ध स्थापित नहीं किया जा सकता है। पुनः असन्दिग्ध रूप से यह भी नहीं कहा जा सकता कि वैदिक काल में राम सम्बन्धी गाथा लोक में प्रचलित थी[28] किन्तु गीता के प्रणयन काल[29] तक राम की शौर्यपूर्ण गाथाएँ इतनी अधिक लोकप्रियता प्राप्त कर चुकी होंगी कि वेद बाह्य परम्परा के साहित्य में भी उनके लिए कतिपय पृष्ठ सुरक्षित होने लगे थे। राम

इक्ष्वाकुवंशीय थे। अतः अनुमान करना असंगत नहीं होगा कि राम सम्बन्धी गाथा की उत्पत्ति इक्ष्वाकुवंश से हुई होगी और वह इस वंश के गाथा–गायकों (सूतों) द्वारा ही सर्वप्रथम गेय बनी होगी। इसकी पुष्टि रामायण से भी होती है–

इक्ष्वाकूणामिदं तेषां राज्ञां वंशे महात्मनाम्।
महदुत्पन्नमाख्यानं रामायणमिति श्रुतम्।।[30]

वे गाथाएँ कुशीलवों द्वारा प्रचारित हुई होंगी। गीता[31] के प्रणयनकाल तक उसे पर्याप्त लोकप्रियता मिल चुकी थी। उनकी प्रसिद्धि के साक्ष्य यूरोपीय देशों में भी प्राप्त हुए हैं।

कृष्ण/बलराम अवतार –

विष्णु के प्रख्यात अवतारों में आठवें (प्राचीन उल्लेखों में नौवें) और भागवत–निर्दिष्ट बाइस अवतारों में बलराम उन्नीसवें तथा कृष्ण बीसवें स्थान पर आसीन हैं। दोनों ही भगवान विष्णु के अवतार माने गये हैं। कहा जाता है कि भगवान विष्णु बलराम और कृष्ण के रूप में अवतार लेकर पृथ्वी का भार उतारा।[32] बलराम और कृष्ण, दोनों भगवान विष्णु के क्रमशः सफेद और काले केशावतार कहे गये हैं। ये विष्णु पुराण में अन्यत्र भी वासुदेव के अंश कहे गये हैं[33] – भगवद्वासुदेवांशों द्विधा पाऽप व्यवस्थितः।[34] पाचरात्र शास्त्रों के अनुसार बलराम वासुदेव के व्यूह या स्वरूप हैं। उनको श्रीकृष्ण का अग्रज और शेष का अवतार माना जाता है। जैन धर्म के अनुसार उनका सम्बन्ध तीर्थंकर नेमिनाथ से है। भारतीय समाज में इनका पूजन बहुत पहले से चला आ रहा है।

महाभारत के मोक्ष धर्म–पर्व में भीष्म ने युधिष्ठिर को बताया है कि श्रीकृष्ण नारायण के चतुर्थांश हैं और अपने उस चतुर्थांश से ही तीनों लोकों की रचना करते हैं।[35] उपर्युक्त तथ्यों से ऐसा प्रतीत होता है कि प्रारम्भ में कृष्ण का परिगणन अंशावतार के रूप में ही होता था, किन्तु भागवत–निर्दिष्ट अवतारों की प्रथम सूची में समस्त अवतारों के वर्णन के उपरान्त इक्कीस अवतारों को अंशावतार एवं कृष्णावतार को पूर्णावतार कहा गया है–

एते चांशकलाः पुंसः कृष्णस्तु भगवान स्वयम्।[36]

वृष्णिवंशियों में विलक्षण व्यक्तित्व वाले कृष्ण को पहले अंशावतार कहा गया किन्तु सोलहों कलाओं से परिपूर्ण होने के नाते बाद में पूर्णावतार स्वीकारा गया। निश्चय ही यह परिवर्तन अतीव महत्वपूर्ण है।

बुद्ध अवतार –

भगवान बुद्ध विष्णु के दशावतारों में नवें और भागवत निदिष्ट बाइस अवतारों में इक्कीसवें अवतार माने जाते हैं। कहा गया है कि कलियुग के आने पर 'कीकट' क्षेत्र में देवता–द्वेषी दैत्यों को मोहित करने के लिए जिनके पुत्र (जिनसुतः, पाठान्तर– 'अजनसुतः') रूप में बुद्ध का अवतार होगा। भागवत पुराण की दूसरी सूची में बुद्ध को उपधर्म का प्रचारक कहा गया है।[37]

मत्स्य पुराण के अनुसार धर्म की विशेष रूप से स्थापना और असुरों का विनाश करने के लिए विष्णु नवें अवतार में बुद्ध नाम से अवतीर्ण हुए। उनके नेत्र कमल के समान थे। सुन्दर उनके सहचर रूपवान थे। द्वैपायन उनके पुरोहित थे।[38] गरुड़ पुराण में बुद्ध अवतार का प्रयोजन देवों के शत्रु दैत्यों को मोहित कर देवों की रक्षा और अधर्म का नाश करना बताया गया है।[39] उन्हें पाखण्डों के संघात से रक्षा करने वाला बताया गया है।[40] अग्निपुराण[41] में बुद्धावतार के वर्णन में कहा गया है कि देवासुर संग्राम में देवता पराजित हो गये। राक्षस उग्रह होते जा रहे थे। देवताओं के पास कोई विकल्प शेष नहीं था। अतः वे सब 'रक्षा करो', 'रक्षा करो' चिल्लाते हुए विष्णु की शरण में

गये। ईश्वर ने माया–मोह रूप में शुद्धोधन–पुत्र बनकर उनके कष्ट दूर करने का आश्वासन दिया। वचनानुसार भगवान विष्णु बुद्ध नाम से अवतरित हुए। उन्होंने दैत्यों को मोहित कर वैदिक धर्म से विमुख कर दिया। भविष्य पुराण[42] में भी उनके सन्दर्भ में यही कहा गया है।

भारतीय समाज में भगवान बुद्ध के जीवन–वृत्त की एक रोचक कथा विद्यमान है। कहा जाता है कि इनका जन्म इक्ष्वाकु वंशीय क्षत्रिय शाक्य कुल के राजा शुद्धोधन के घर में हुआ था। उनकी माँ का नाम महामाया था, जो कोलीय वंश से थी, बुद्ध के जन्म के सात दिन बात उनका निधन हो गया। उनका पालन बुद्ध की छोटी मौसी महाप्रजापति गौतमी ने किया। 29 वर्ष की आयु में सिद्धार्थ का विवाह हुआ। कुछ दिन पश्चात् पुत्र राहुल का जन्म हुआ। संसार से उदास भगवान बुद्ध शिशु राहुल और धर्मपत्नी यशोधरा को त्यागकर संसार को जरा, मरण एवं दुखों से मुक्ति दिलाने के मार्ग तथा सत्य दिव्य ज्ञान की खोज में अर्द्धरात्रि में राजपाट का मोह त्यागकर वन की ओर चले गये। वर्षों की कठोर साधना के पश्चात् बोधगया (बिहार) में बोधि वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई और वे सिद्धार्थ गौतम से भगवान बुद्ध बन गये। उनका मानना था सभी प्राणी दण्ड से डरते हैं और सबको जीवनप्रिय है। इसलिए सबको अपने समान समझकर न किसी की हिंसा करें और न किसी को हिंसा के लिए प्रेरित करें।

कल्कि अवतार –

भगवान विष्णु के प्रख्यात अवतारों में दसवां और भागवत–निर्दिष्ट अवतारों में बाइसवाँ अवतार कल्कि अवतार माना गया है। कल्क का शाब्दिक अर्थ दम्भ, पाप इत्यादि है अर्थात् भगवान विष्णु का यह स्वरूप दम्भ, पापदि का विनाशक है। इस अवतार का सर्वप्रथम वर्णन हमें महाभारत में मिलता है। भगवान विष्णु के समस्त अवतारों में यह सर्वथा भिन्न है। सम्प्रति इसकी पूजा–उपासना कहीं नहीं होती।

अवतार–कथाओं[43] में सर्व सहमति है कि कल्कि अवतार भविष्य में होने वाला है। कहा गया है कि कलियुग का अन्तिम समय उपस्थित होने पर जब राजा लुटेरे हो जायेंगे, जब अधर्म चरमसीमा पर होगा, तब जगत्पति लोक हितार्थ कल्कि रूप में अवतरित होंगे। उनका वर्ण हरित–पिंगल (हरा और भूरा) होगा। अवतरित होने का स्थान संभल नामक ग्राम (मुरादाबाद जिला?) उल्लिखित है।[44] कई कथाओं में विष्णुपशा कल्कि के पिता कहे गये हैं[45]– किन्तु वायुपुराण एवं मत्स्यपुराण में कल्कि 'पाराशर्य' अर्थात् पराशर के पुत्र माने गये हैं।[46] कई कथाओं में विष्णुपशा कल्कि को ही कहा गया है।[47] कल्कि के पुरोहित याज्ञवल्क्य कहे गये हैं।[48] कतिपय विद्वानों के अनुसार वायु और मत्स्यपुराणों में उल्लिखित पराशर भी कल्कि के पुरोहित ही हैं, पिता नहीं। उनके घोड़े का नाम देवदत्त है।[49] वैसे तो कल्कि अवतार का वर्णन कई पुराणों में मिलता है, किन्तु कल्कि–उपपुराण।[50] इस पर सर्वाधिक प्रकाश डालता है। उसमें यह कथा उन्नीस अध्यायों में वर्णित है।

सन्दर्भ सूची

1- शेषाद्रि आर०के०– एबाइडिंग ग्रेस, पृ0 111–12.

2- इतिहास दर्शन – रामविलास शर्मा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 19–20.

3- पश्चिमी एशिया और ऋग्वेद – डॉ० रामविलास शर्मा, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली, पृ0 165–67.

4- मार्शल – श्री लक्ष्मी, पृ0 194.

5- हड़प्पा सभ्यता और वैदिक साहित्य – भगवान सिंह, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, खण्ड–2, पृ0 20.

6- विष्णु पुराण – 1/9/75–91, अग्नि पुराण–3/1–8; गरुड़ पुराण – 1/142/2–4.

7- शतपथ ब्राह्मण – 7/5/1/5.

8- शतपथ ब्राह्मण – 7/5/1/5.

9- कीथ – रिलीजन एण्ड फिलासफी, भाग–01, पृष्ठ–112, मैकडॉनल – जर्नल ऑफ रॉयल एशियाटिक सोसायटी, भाग–27 (1897), पृ0 166–168.

10- शतपथ ब्राह्मण – 7/5/1/2.

11- तैत्तिरीय आरण्यक – 1/23/2–4

12- भागवतपुराण–2/7/1.

13- भागवतपुराण–1/3/7, गुरुड़ पुराण–1/1/15.

14- शतपथब्राह्मण– 14/1/2/11.

15- तैत्तिरीय संहिता – 7/1/5/14.

16- तैत्तिरीय ब्राह्मण – 1/1/3/5.

17- तैत्तिरीय आरण्यक – 1/1/30.

18- पद्मपुराण – 1/20/156.

19- भागवतपुराण– 1/3/18, गरुड़ पुराण 1/1/26, मत्स्य पुराण–47/46.

20- मत्स्य पुराण– 47/238–39.

21- भागवत पुराण–1/3/19, गरुड़ पुराण– 1/1/27.

22- भागवत पुराण– 1/3/20, गरुड़ पुराण–1/1/28.

23- भागवतपुराण–2/7/22.

24- मत्स्य पुराण–47/244.

25- गरुड़ पुराण–1/1/30.

26- शर्मा, रामविलास– भारतीय संस्कृति और हिन्दी प्रदेश, जिल्द–02, पृ0 653.

27- ठाकुर प्रसाद वर्मा– अयोध्या एवं श्रीराम जन्मभूमि : एक सिंहावलोकन, श्रीराम विश्वकोश, प्रथम खण्ड, पृ0–726.

28- ऋग्वेद – 10/93/14.

29- एस० राधाकृष्ण – इण्डियन फिलॉसफी, वाल्यूम–01, पृ0 522–25.

30- रामायण – 1/5/3.

31- गीता, पृ0–14.

32- भागवतपुराण– 1/3/23, गरुड़ पुराण–1/1/31.

33- महाभारत– 1/196/31–31; विष्णु पुराण–5/1/60–61; भागवतपुराण– 2/7/26.

34- विष्णु पुराण – 5/17/26.

35- महाभारत 12/280/62.

36- भागवतपुराण–1/3/28.

37- भागवतपुराण– 2/7/37.

38- मत्स्यपुराण – 47/247.

39- गरुड़ पुराण– 1/145/40–41.

40- गरुड़ पुराण – 1/196/11.

41- अग्नि पुराण–16/1–4.

42- भविष्य पुराण – 4/12/26–29.

43- महाभारत – 3/190/93–97; हरिवंशपुराण – 1/41/164–169; मत्स्यपुराण 47/248–55; ब्रह्मपुराण 213/164–65

44- ब्रह्मपुराण – 213/164; हरिवंशपुराण – 1/41/164; भागवत्पुराण 12/2/18.

45- अग्निपुराण – 19/8; भागवतपुराण – 1/3/25.

46- वायुपुराण – 98/104, मत्स्यपुराण – 47/248.

47- महाभारत – 31/190/93; हरिवंशपुराण –'1/41/164.

48- अग्निपुराण – 16/8, मत्स्यपुराण – 47/248, हरिवंशपुराण– 1/41/165.

49- भागवतपुराण – 12/2/19.

50- कल्कि उपपुराण – 3/1/19.